

वैश्विक जागरण में महिलाओं की भूमिका

डॉ. कैलाश चन्द मीणा

सहायक आचार्य, शिक्षापीठ

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सारांश :-

प्रस्तुत शोध सार का उद्देश्य वैश्विक जागरण के संदर्भ में महिलाओं की बदलती और सशक्त होती भूमिका का विश्लेषण करना है। वैश्विक जागरण के वर्तमान युग में महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में परिवर्तन की प्रमुख वाहक के रूप में उभर रही हैं। शिक्षा, तकनीकी विकास, जागरूकता और समान अवसरों के विस्तार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर, निर्णय-क्षम एवं नेतृत्वशील बनाया है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि महिला शिक्षा, उद्यमिता, नवाचार तथा राजनीति और प्रशासन में बढ़ती भागीदारी ने समाज को अधिक समावेशी और संवेदनशील बनाया है। महिलाएँ स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और सतत विकास जैसे वैश्विक मुद्दों पर प्रभावी योगदान दे रही हैं। इसके अतिरिक्त, महिला सशक्तिकरण ने लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने और सामाजिक असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बीज बिंदु :- वैश्विक जागरण, महिला, आत्मनिर्भर, सशक्तिकरण।

भूमिका :-

वैश्विक जागरण का अर्थ :-

वैश्विक जागरण का तात्पर्य है—मानव समाज का अपने अधिकारों, कर्तव्यों, समानता, न्याय और सतत विकास के प्रति सजग होना। यह जागरण केवल किसी एक देश तक सीमित नहीं है, बल्कि विश्व स्तर पर लोकतंत्र, मानवाधिकार, लैंगिक समानता, पर्यावरण संरक्षण और शांति की भावना को मजबूत कर रहा है।

आज "वैश्विक जागरण: महिलाएँ और युवा—पुनर्जीवित एवं सशक्त परिवर्तन का नेतृत्व कर रहे हैं" जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण और समसामयिक विषय है।

आज का युग परिवर्तन का युग है। पूरी दुनिया एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ मानव समाज अपने अधिकारों, कर्तव्यों, समानता, न्याय और सतत विकास के प्रति जागरूक हो रहा है। यही चेतना वैश्विक जागरण कहलाती है। इस जागरण की सबसे सशक्त शक्ति हैं—महिलाएँ और युवा।

महिलाएँ, जिन्हें कभी समाज के सीमित दायरे में बाँध दिया गया था, आज शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, प्रशासन, खेल, उद्यमिता और सामाजिक आंदोलनों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। वे न केवल अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठा रही हैं, बल्कि पूरे समाज को संवेदनशील, समावेशी और न्यायपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। महिला सशक्तिकरण ने यह सिद्ध कर दिया है कि जब महिलाएँ आगे बढ़ती हैं, तो पूरा समाज आगे बढ़ता है।

International Journal of Innovations in Research

ISSN: 3048-9369 (Online)

Special Issue for Selected Papers of 4th International Conference on Shakti se Samridhi by IFTDO-CWYEE and Divathary Vikas Foundation at Jaipur in February '26

जब महिलाएँ और युवा मिलकर नेतृत्व करते हैं, तो परिवर्तन केवल तेज़ नहीं होता, बल्कि स्थायी और मानवीय भी होता है। महिलाएँ करुणा और धैर्य के साथ समाज को जोड़ती हैं, जबकि युवा साहस और नवीन सोच से उसे आगे ले जाते हैं। यही संयुक्त शक्ति एक नए, जागरूक और सशक्त विश्व का निर्माण कर रही है।

वैश्विक जागरण के वर्तमान युग में महिलाओं की शिक्षा और आत्मनिर्भरता सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की सबसे सशक्त आधारशिला बन चुकी है। शिक्षा ने महिलाओं को केवल ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक, आत्मविश्वासी और निर्णय-क्षम बनाया है। यही जागरूकता वैश्विक स्तर पर महिलाओं को परिवर्तन का नेतृत्व करने के लिए प्रेरित कर रही है।

महिलाओं की शिक्षा उनके व्यक्तित्व विकास का मूल आधार है। शिक्षित महिलाएँ समाज की रूढ़ मान्यताओं को चुनौती देती हैं और समानता, न्याय तथा मानवाधिकारों की स्थापना में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। आज महिलाएँ शिक्षा के बल पर विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, प्रशासन, राजनीति और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। इससे समाज में लैंगिक समानता और प्रगतिशील सोच को बढ़ावा मिल रहा है।

आत्मनिर्भरता महिलाओं को सामाजिक निर्भरता से मुक्त कर आर्थिक सशक्तिकरण की ओर ले जाती है। शिक्षित महिलाएँ रोजगार, स्वरोजगार और उद्यमिता के माध्यम से न केवल स्वयं को सक्षम बनाती हैं, बल्कि परिवार और समाज की आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ करती हैं। आत्मनिर्भर महिलाएँ निर्णय-निर्माण में सक्रिय भागीदारी करती हैं और आने वाली पीढ़ी को भी शिक्षित एवं सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वैश्विक स्तर पर महिला शिक्षा और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने हेतु अनेक योजनाएँ, नीतियाँ और आंदोलन संचालित हो रहे हैं, जिनसे शिक्षा अधिक सुलभ और अवसर अधिक समान हो रहे हैं। डिजिटल शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों ने महिलाओं के लिए नए द्वार खोले हैं।

वैश्विक जागरण के युग में महिलाओं की राजनीति और प्रशासन में बढ़ती भागीदारी लोकतंत्र को अधिक समावेशी, संवेदनशील और प्रभावी बना रही है। लंबे समय तक इन क्षेत्रों पर पुरुषों का वर्चस्व रहा, किंतु शिक्षा, सामाजिक चेतना और महिला सशक्तिकरण आंदोलनों के परिणामस्वरूप आज महिलाएँ विश्व स्तर पर नेतृत्वकारी भूमिकाओं में सक्रिय हैं।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी ने नीतिगत दृष्टिकोण को मानवीय और संतुलित बनाया है। अनेक देशों में महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सांसद और मंत्री के रूप में कार्य कर चुकी हैं या कर रही हैं। उनके नेतृत्व में शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल-विकास, महिला सुरक्षा, सामाजिक न्याय और शांति जैसे मुद्दों को प्राथमिकता मिली है। इससे शासन में संवेदनशीलता और जवाबदेही बढ़ी है।

प्रशासनिक क्षेत्र में भी महिलाएँ उच्च पदों पर पहुँचकर सुशासन को सुदृढ़ कर रही हैं। सिविल सेवाओं, कूटनीति, न्यायपालिका और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति ने निर्णय-निर्माण को

International Journal of Innovations in Research

ISSN: 3048-9369 (Online)

Special Issue for Selected Papers of 4th International Conference on Shakti se Samridhi by IFTDO-CWYEE and Divathary Vikas Foundation at Jaipur in February '26

अधिक समावेशी बनाया है। महिला प्रशासक पारदर्शिता, अनुशासन और जनकल्याण की भावना के साथ कार्य कर समाज के वंचित वर्गों की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ पाती हैं।

वैश्विक जागरण के वर्तमान दौर में महिलाओं की उद्यमिता और नवाचार विश्व-स्तरीय परिवर्तन की महत्वपूर्ण शक्ति बनकर उभरी है। शिक्षा, तकनीक और समान अवसरों की बढ़ती उपलब्धता ने महिलाओं को केवल रोजगार पाने वाली नहीं, बल्कि रोजगार सृजक और नवाचार की नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित किया है।

महिलाओं की उद्यमिता आर्थिक आत्मनिर्भरता का सशक्त माध्यम है। आज महिलाएँ स्टार्ट-अप, सामाजिक उद्यम, कुटीर एवं लघु उद्योग, डिजिटल व्यवसाय और सेवा क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इससे न केवल उनकी आय और सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिली है। महिला-नेतृत्व वाले उद्यम प्रायः समावेशी विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व पर केंद्रित होते हैं।

नवाचार महिलाओं की उद्यमशीलता को वैश्विक पहचान दिलाता है। महिलाएँ स्थानीय समस्याओं के रचनात्मक और टिकाऊ समाधान प्रस्तुत कर रही हैं—जैसे पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद, जैविक कृषि, स्वास्थ्य एवं शिक्षा आधारित तकनीक, हस्तशिल्प का आधुनिकीकरण और डिजिटल सेवाएँ। ये नवाचार न केवल बाज़ार की माँग पूरी करते हैं, बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन भी स्थापित करते हैं।

निष्कर्ष :-

अतः वैश्विक जागरण में महिलाओं की उद्यमिता एवं नवाचार आर्थिक प्रगति, सामाजिक परिवर्तन और नैतिक विकास का सशक्त आधार हैं।

अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि महिला शिक्षा, उद्यमिता, नवाचार तथा राजनीति और प्रशासन में बढ़ती भागीदारी ने समाज को अधिक समावेशी और संवेदनशील बनाया है। महिलाएँ स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और सतत विकास जैसे वैश्विक मुद्दों पर प्रभावी योगदान दे रही हैं। इसके अतिरिक्त, महिला सशक्तिकरण ने लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने और सामाजिक असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से समाज में समानता, न्याय, समावेशन और सतत विकास को बल मिला है। शिक्षा, आत्मनिर्भरता, उद्यमिता, नवाचार तथा राजनीति और प्रशासन में उनकी भूमिका ने वैश्विक जागरण को ठोस और व्यवहारिक रूप प्रदान किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिलाओं के सशक्तिकरण के बिना वैश्विक जागरण अधूरा है। शिक्षित, आत्मनिर्भर और जागरूक महिलाएँ ही एक न्यायपूर्ण, समतामूलक और प्रगतिशील वैश्विक समाज के निर्माण की आधारशिला हैं।